स्नातक प्रतिष्ठा दिनांक -7/5/2020

द्वितीय - खण्ड

तृतीय पत्र

MONDAY 05 MAY

प्रश्न:- छायावाद की मुख्य विशेषताएं अपने शब्दों में लिखें।

प्रश्नोत्तर:- छायावाद का नामकरण कविताओं के आधार पर किया गया है। आज हम छायावाद की मुख्य विशेषताओं का अध्ययन करेंगे। छायावाद में कवि सामान्य धरातल पर न रहकर भावों और कल्पनाओं की दुनिया में विचरण करता था। स्वच्छंदता की एक सामान्य भावधारा की अभिव्यक्ति का नाम छायावाद है। यह नामकरण मुकुटधर पाण्डेय का किया हुआ है। उन्होंने ही व्यंग्यात्मक रूप में यह नामकरण किया था जिसे उस समय के कवियों ने अंगीकार कर लिया था। छायावाद को लेकर आलोचना जगत में काफी विवाद हुआ था। इसका कारण यह था कि यथार्थवाद, आदर्शवाद, प्रगतिवाद आदि ऐसे नाम हैं, जिनके आधार पर दूसरे वादों का नामकरण

हुआ था। साथ ही इन वादों की विशेषताओं
आसानी से समझा जा सकता है, परंतु छाया-
वाद व किसी स्पष्ट धारा का बोध नहीं
है। छायावाद के व्यापक अर्थ में रहस्यवाद को भी
समाविष्ट किया गया है। महाकवि जयशंकर प्रसाद
ने छायावाद में स्वानुभूति की विवृत्ति पर बल दिया था
परंतु आगे चलकर छायावाद और रहस्यवाद
को अलग-अलग माना गया। छायावाद में इन
विशेषताओं के साथ-साथ प्रेम, सौंदर्य आदि भावों
को भी स्वीकार किया जाता रहा है, रहस्यवाद
निराकार प्रेम, और निराकार प्रिय के प्रति प्रणय
निवेदन को आधार बनाया गया है, यद्यपि प्रसाद
ने अपनी व्याख्या में कश्मीरी शैव दर्शन को सम्मिलित
करने का प्रयास किया था पर यह सर्वमान्य नहीं
हुआ है। वस्तुतः छायावादी काव्य स्वच्छंदता
कम पुनरुत्थानवादी अधिक है।

छायावाद की प्रणयानुभूति पर रीतिकालीन शृंगार-चित्रण का काफी प्रभाव देखा जा सकता है। काव्यशास्त्रीय मूल्यों की दृष्टि से भी छायावाद प्राचीन रचना के सिद्धांत के अनुरूप है। जहाँ तक दार्शनिक सिद्धांतों का संबंध है, छायावादी काव्य सर्ववाद, कर्मवाद, वेदांत, शैव दर्शन, अद्वैतवाद, भक्ति आदि पुराने सिद्धान्तों को ही व्यक्त करता दिखायी देता है।

छायावादी काव्य की अभिव्यंजना-पद्धति भी नवीनता और ताजगी लिए हुए है। द्विवेदीकालीन खड़ी बोली और छायावादी खड़ी बोली में पर्याप्त अंतर है। भाषा का विकास भी विकास का अंतरंग तत्व है। द्विवेदी युग बहिर्मुखी और स्थूल भाषा का परिचायक है, इसके विपरीत छायावाद में जीवन की सूक्ष्म विवृति मिलती है। इनके काव्य में उपचार वक्रता के साथ मानवीकरण आदि अनेक विशेषताएँ मिलती हैं।

छायावादी काव्य में प्रधान रूप से प्रणय की अनुभूति को व्यक्त किया गया है। प्रणय में विभिन्न

4

आन्तरिक मनोभावनाओं का जैसे - [illegible]
व्याकुलता, व्यग्रता, तल्लीनता, निराशा, पीड़ा, आतुरता,
विषाद आदि का वास्तविक एवं मार्मिक चित्रण
मिलता है। इनमें भावानुभूति की अभिव्यक्ति प्रत्यक्ष
में देखने को मिलती है। रसानुभूति की इन कविताओं
में पाठक सहज तल्लीन हो जाता है।
छायावाद की ये
अभिव्यक्तियाँ सूक्ष्म होते हुए भी स्थूल उपकरणों
द्वारा व्यंजित की गयी है। प्रसाद की तरह महादेवी
वर्मा भी सत्य को काव्य का साध्य मानती हैं
और सौंदर्य को उसका साधन मानती हैं।
सौंदर्य का प्रधान स्रोत प्रकृति है। नारी के
शारीरिक सौंदर्य के अनेक मोहक चित्र प्रणय की
कविताओं में मिलते हैं। प्रसाद कृत 'आँसू', 'कुसुम'
तथा पंत कृत 'भावी पत्नी के प्रति' कविता में तथा
निराला की 'जूही की कली' में प्रत्यक्ष में परोक्ष
का सांकेतिक रूप लक्षित होता है।
इन कवियों की सौंदर्य - भावना न प्रसं[illegible]

के विभिन्न दृश्यों को मानवीकरण की मनोहर रूपों में स्वीकार किया गया है। जयशंकर प्रसाद की कविता 'बीती विभावरी जाग री', निराला की 'संध्या सुंदरी', पंत की 'नौका विहार' में कोमल भावों का कोमल हो या 'कामायनी' का प्रलय वर्णन, निराला की 'बादल राग', पंत की कविता 'परिवर्तन' में प्रकृति का कठोर रूप देखने को मिलता है। निष्कर्षतः हम कह सकते हैं कि छायावादी काव्य में अनुभूति और सौंदर्य के स्तर पर प्रायः मानव और प्रकृति के भावों और रूपों का तादात्म्य दिखाई देता है।

कुमार रजनीकान्त रंजन
7.5.2020